छोड़ फिक्रें दुनिया की चल मदीने चलते हैं | By Zartaj Kausar

मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा या मुस्तफा

छोड़ फिक्रें दुनिया की चल मदीने चलते हैं
मुस्तुफा गुलामो की किस्मतें बदलते हैं

रेहमतो की चादर के सर पे साये चलते हैं
मुस्तफा के दीवाने घर से जब निकलते हैं

फिक्रें शाहे फतहा को विर्द अब बना लीजिये
ये वो ज़िक्र है जिससे ग़म खुशी में ढलते हैं

नक़्शे करले सीने पर नाम सरवरे दीन का
ये वो नाम है जिससे सब अज़ाब टलते हैं

सच है हर एक का एहसां हम कभी नहीं लेते
ऐ अलीम आक़ा के हम टुकड़ो पे पलते हैं

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9b%e0%a5%8b%e0%a4%a1%e0%a4%bc-%e0%a4%ab%e0%a4%bf%e0%a4%95%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%87%e0%a4%82-%e0%a4%a6%e0%a5%81%e0%a4%a8%e0%a4%bf%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%9a%e0%a4%b2/